बुद्धिपर्यन्तसंसारे
मायामात्रं विवर्तते।
निर्ममो निरहंकारो
निष्कामः शोभते बुधः
भावार्थ– बुद्धि के अंत तक ही संसार है और यह केवल माया का विवर्त है, इस तत्त्व को जानने वाला बुद्धिमान् ममता, अहंकार और कामना से रहित होकर शोभित होता है।
–सुप्रभात

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

70 साल से पढ़ा रहे है गांधी को किसने मारा गुरु गोविंद सिंह जी के बच्चों को किसने और क्यों मारा ये भी पढ़ा देते

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 16 अंक : 52 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 09 जनवरी से 15 जनवरी, 2025 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

मादक पदार्थ ले जाने वाले वाहनों को मुकदमे के बाद जब्त किया जाएगा: उच्चतम न्यायालय

नई इिल्ली(संवाद सूत्र)। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि मादक पदार्थ की ढुलाई के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों को मुकदमे के समापन के बाद तब जब्त किया जा सकता है, जब आरोपी को दोषी ठहराया जाता है या बरी कर दिया जाता है या उसे आरोप–मुक्त कर दिया जाता है। न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति मनमोहन की पीठ ने अपने फैसले में कहा कि जब्त वाहनों की अंतरिम रिहाई के खिलाफ स्वापक औषधि एवं मनरूप्रभावी पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत कोई विशेष प्रतिबंध नहीं है, बशर्ते मालिक अपराध में शामिल न हो। पीठ ने कहा, "एनडीपीएस अधिनियम को पढ़ने के बाद, इस अदालत का मानना है कि पकड़े गये वाहनों को निचली अदालत द्वारा केवल तभी जब्त किया जा सकता है, जब आरोपी को दोषी ठहराया जाता है या बरी कर दिया जाता है या उसे आरोपमुक्त कर दिया जाता है।" इसके अलावा, जब अदालत यह निर्णय लेती है कि वाहन को जब्त किया जाना चाहिए, तो उसे वाहन के मालिक को सुनवाई का अवसर देना चाहिए।

पीठ की ओर से फैसला लिखने वाले न्यायमूर्ति मनमोहन ने कहा कि पकड़े गये वाहन को जब्त नहीं किया जा सकता, यदि उसका मालिक यह साबित कर दे कि वाहन का इस्तेमाल आरोपी व्यक्ति ने उनकी जानकारी या मिलीभगत के बिना किया था और उन्होंने दुरुपयोग के खिलाफ सभी एहतियाती कदम उठाए थे।

छोटे निवेशकों के लिए बड़ा मौका! अगले हफ्ते आएंगे 7 नए आईपीओ, 6 कंपनियों की होगी लिस्टिंग

मुंबई। नए वर्ष 2025 का दूसरा हफ्ता आईपीओ के नजरिए के काफी व्यस्त रहने वाला है, क्योंकि इस दौरान शेयर बाजार में मेनबोर्ड और एसएमई को सात पब्लिक इश्यू खुलेंगे और वहीं, छह कंपनियों की लिस्टिंग होगी। स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी का आईपीओ 6 जनवरी से लेकर 8 जनवरी तक खुलेगा। इस आईपीओ का इश्यू साइज 410.05 करोड़ रुपये का होगा। इस पब्लिक इश्यू का प्राइस बैंड 133 रुपये से लेकर 140 रुपये होगा। फार्मास्यूटिकल और केमिकल सेक्टर के लिए इंजीनियरिंग उपकरण बनाने वाली इस कंपनी ने 3 जनवरी को एंकर बुक के जरिए पहले ही 123.02 करोड़ रुपये जुटा लिए हैं। इस आईपीओ की लिस्टिंग 13 जनवरी को हो सकती है। क्वाड्रेंट फ्यूचर टेक का आईपीओ 7 से 9 जनवरी तक आम निवेशकों के लिए खुलेगा। इस कंपनी का इश्यू साइज 290 करोड़ रुपये का होगा। इसका प्राइस बैंड 275 रुपये से लेकर 290 रुपये के बीच होगा। भारतीय रेलवे की कवच परियोजना के तहत नई पीढ़ी के ट्रेन नियंत्रण और सिग्नलिंग सिस्टम विकसित करने वाली कंपनी की लिस्टिंग 14 जनवरी को हो सकती है। कैपिटल इन्फ्रा ट्रस्ट इनविट का आईपीओ 7 जनवरी से लेकर 9 जनवरी तक खुलेगा। इसका प्राइस बैंड 99 रुपये से लेकर 100 रुपये तक होगा। इस इश्यू का साइज 1,578 करोड़ रुपये होगा। इसकी लिस्टिंग 14 जनवरी को होगी। इसके अलावा चार एसएमई आईपीओ भी खुल रहे हैं, जिसमें बीआर गोयल इंफ्रास्ट्रक्चर, डेल्टा ऑटोकॉर्प, इंडोबेल इंसुलेशन, अवाक्स अपैरल्स एंड ऑर्नामेंट्स का आईपीओ शामिल है। इन आईपीओ का साइज क्रमशरू 85.21 करोड़ रुपये, 54.60 करोड़ रुपये, 10.14 करोड़ रुपये और 1.92 करोड़ रुपये होगा। ये सभी आईपीओ 6 जनवरी से आम निवेशकों के लिए खुल रहे हैं।

ब्रह्मपुत्र पर चीन के प्रस्तावित बांध को लेकर भारत सतर्क: राजनाथ सिंह

नई इिल्ली(संवाद सूत्र)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार तिब्बत में भारत की सीमा के निकट ब्रह्मपुत्र नदी पर एक विशाल बांध बनाने की चीन की योजना को लेकर सतर्क है। चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र पर दुनिया का सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना की घोषणा करने के कुछ दिनों बाद, भारत ने कहा कि वह अपने हितों की रक्षा के लिए निगरानी जारी रखेगा और आवश्यक कदम उठाएगा। नयी दिल्ली ने बीजिंग से यह सुनिश्चित करने का आग्रह भी किया है कि ब्रह्मपुत्र के निचले बहाव वाले इलाकों के हितों को ऊपरी इलाकों में होने वाली गतिविधियों से नुकसान न पहुंचे। रक्षा मंत्री ने यहां एक कार्यक्रम के दौरान बांध के बारे में पूछे जाने पर कहा, "भारत सरकार सतर्क है।" सिंह ने मंगलवार को यहां माध्यमिक शिक्षक संघ (शर्मा गुट) के मुफीद–ए–आम इंटर कॉलेज में आयोजित राज्य सम्मेलन में कहा, "पहले जब भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बोलता था तो लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते थे, लेकिन अब जब भारत बोलता है तो दुनिया सुनती है।" उन्होंने कहा, "भारत हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। पहले (वैश्विक स्तर पर) अर्थव्यवस्था 11वें स्थान पर थी। अब भारतीय अर्थव्यवस्था पांचवें स्थान पर है और आने वाले ढाई साल में यह शीर्ष तीन देशों में शामिल होगी।

प्रवासी भारतीय दिवस ओडिशा के लिए अपनी समृद्ध विरासत प्रदर्शित करने का अवसर: एस जयशंकर

भुवनेश्वर(संवाद सूत्र) । विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम ओडिशा के लिए अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरा को विश्व के समक्ष प्रदर्शित करने का अवसर है। तीन दिवसीय प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम बुधवार से यहां शुरू होने जा रहा है। यह कार्यक्रम प्रवासी केंद्र सरकार के साथ भारतीय समुदाय के जुड़ाव को मजबूत करने और उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से फिर से जोड़ने के लिए हर दो साल में एक बार आयोजित किया जाता है। कड़ी सुरक्षा के बीच जयशंकर अपनी पत्नी के साथ कोणार्क में 13वीं सदी के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर और पुरी में श्री जगन्नाथ मंदिर गए। जयशंकर ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, "आज कोणार्क में भव्य सूर्य मंदिर के दर्शन कर बहुत खुशी हुई। हमारी विरासत और रचनात्मकता का प्रमाण, कोणार्क आने वाले दिनों में भुवनेश्वर की यात्रा करने वाले हमारे सभी प्रवासी मित्रों के लिए अवश्य आने लायक जगह है।" उन्होंने प्रसिद्ध कोणार्क चक्र की दो तस्वीरें भी पोस्ट कीं। बाद में, मंत्री ने पुरी में 12वीं सदी के श्री जगन्नाथ मंदिर का दौरा किया और भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और भगवान जगन्नाथ की पूजा–अर्चना की। उन्होंने मंदिर के अंदर लगभग 40 मिनट बिताए और मंदिर और देवताओं के बारे में पुजारियों और सेवकों से बातचीत की। उन्होंने कहा, "भुवनेश्वर में प्रवासी भारतीय दिवस समारोह की शुरुआत से पहले भगवान जगन्नाथ के दर्शन का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रवासी भारतीय दिवस पहली बार ओडिशा में आयोजित किया जा रहा है। हमने ओडिशा सरकार के साथ मिलकर सभी प्रयास किए हैं। यह ओडिशा के लिए पूरी दुनिया के सामने अपनी छवि पेश करने और विश्व फलक पर आकर्षण का केंद्र बनने का एक अवसर है।" राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर भुवनेश्वर का दौरा करेंगे। जयशंकर ने कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आने वाले प्रतिनिधि पुरी में श्री जगन्नाथ मंदिर जा सकते हैं। जयशंकर के साथ मंदिर पहुंचे पुरी के पुलिस अधीक्षक विनीत अग्रवाल ने कहा कि विदेश मंत्री पटचित्र कलाकारों के गांव रघुराजपुर का दौरा करेंगे। उन्होंने बताया कि भुवनेश्वर पहुंचने से पहले वह धौली शांति पैगोडा भी जाएंगे। तीन दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रवासी भारतीयों का भुवनेश्वर पहुंचना शुरू हो गया है।

महाकुंभ, अर्द्ध कुंभ और पूर्ण कुंभ के बीच क्या है अंतर, जानिए कैसे की जाती है गणना

हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए महाकुंभ आस्था का एक मुख्य केंद्र है। 13 जनवरी 2025 से महाकुंभ की शुरूआत होने जा रहे

हैं। वहीं 26 फरवरी 2025 को इसका समापन हो जाएगा। धार्मिक मान्यता के अनुसार, महाकुंभ मेले में स्नान करने से व्यक्ति के जीवन के सारे पाप धुल जाते हैं और उस व्यक्ति को जीवन–मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है। यही वजह है कि महाकुंभ के मेले में लाखों नहीं बल्कि करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

शाही स्नान तिथियां

13 जनवरी 2025 – लोहड़ी

14 जनवरी 2025 – मकर संक्रांति

29 जनवरी 2025 – मौनी अमावस्या

03 फरवरी 2025 – बसंत पंचमी

12 फरवरी 2025 – माघी पूर्णिमा

26 फरवरी 2025 – महाशिवरात्रि

जानिए क्यों लगता है कुंभ मेला

बता दें कि कुंभ मेले का आयोजन प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक इन 4 जगहों पर लगता है। पौराणिक कथा के मुताबिक समुद्र मंथन के बाद जब अमृत कलश के लिए देवताओं और असुरों में युद्ध हुआ, तो अमृत की कुछ बूंद इन 4 जगहों पर गिरी थीं। इसलिए प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में ही कुंभ का आयोजन किया जाता है।

पूर्ण कुंभ

हर 12 साल में लगने वाले कुंभ मेले को पूर्ण कुंभ कहा जाता है। इस मेले का आयोजन प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन या नासिक में होता है। ज्योतिषीय गणना के आधार पर यह निर्णय किया जाता है कि पूर्ण कुंभ के स्थान का निर्णय किया जाता है।

अर्द्ध कुंभ

अर्द्ध कुंभ, इसके नाम से ही स्पष्ट होता है कि इसका अर्थ आधा होता है। इस प्रकार कुंभ के विपरीत हर 6 साल में अर्द्ध कुंभ का आयोजन किया जाता है। प्रयागराज और हरिद्वार में अर्द्ध कुंभ का आयोजन किया जाता है।

महाकुंभ

हर 144 साल बाद महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। सिर्फ प्रयागराज में इसका आयोजन होता है। बता दें कि 12 पूर्ण कुंभ के बाद महाकुंभ आता है। वहीं इसको सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें भाग लेने के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।

जिलाध्यक्ष के उम्मीदवारों से पूछे गए सवाल...किसने किया है पार्टी के लिए रक्तदान

गोरखपुर। कांग्रेस जिलाध्यक्ष पद के लिए योग्य उम्मीदवार की तलाश शुरू हो गई है। मंगलवार को लखनऊ में पार्टी कार्यालय पर इसके लिए साक्षात्कार लिया गया। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राजबब्बर समेत वरिष्ठ नेताओं की चयन समिति ने सवाल पूछा कि कितने लोगों ने पार्टी के कार्यक्रमों में रक्तदान किया है तो जवाब में बमुश्किल पांच हाथ ही उठे। इसके बाद अगला सवाल आया कि कितनों ने पौधरोपण किया है। कांग्रेस को नई उर्जा देने के लिए इस बार चयन समिति बनाई गई है। यह समिति आवेदकों का साक्षात्कार ले रही है। 12 तारीख तक अलग–अलग जिलों के नेताओं का साक्षात्कार होना है।

जय आत्मेश्वर

आज की प्रार्थना

संग्रह करता हूँ, रक्षण करता,
करते रहता हूँ, भविष्य चिंता।
प्रभु आज ही आज,जब जीवन है,
भविष्य की चिंता,ना रहे जिंदा।।

हे अगम अगोचर, सर्व व्यापक,
अनुभूति क्यों है, इतनी कठिन।
मैं का अहंकार, मिटजाए मेरा,
अनुभूति मिले, क्षण–क्षण हर दिन।

- आत्मिक श्रीधर

जय आत्मेश्वर

आज की प्रार्थना

क्या उत्तर दक्षिण, पूरब पश्चिम,
सोमवार रविवार, पूरे सातो दिन।
एकांत रहूँ, या मेले में,
दीदार करूँ, पल–छिन पल–छिन।।

टूट जाएँ गलत, मेरी धारणाएँ,
व्यर्थ ज्ञान भ्रमण, उलझन हजार।
भाव ही प्रधान, निर्मल कर दो,
ज्ञान मार्ग कठिन,खुले ध्यान द्वार।।

- आत्मिक श्रीधर

अपना जीविकोपार्जन ईमानदारी के साथ करें

अपनी जीविका ईमानदारी पूर्वक काम करते हुए चलाएं। किसी का अहित ना करें। यह प्राकृतिक नियम है कि पात्रता और पुरुषार्थ के अनुरूप ही प्रतिफल मिलता है। हमारे जीवन के पवित्र लक्ष्य ही वह रामबाण औषधि है, जो दुर्विचार रूपी असुरों का संहार करती है। हमारे पुर्वजों, ऋषि , मुनियों ने जीवन का सार इन शब्दों में बताया है कि सही या गलत कुछ भी नहीं है। यह तो सिर्फ सोच का खेल है, पूरी ईमानदारी से जो व्यक्ति अपना जीविकोपार्जन करता है, उससे बढ़कर दूसरा कोई महात्मा नहीं है।

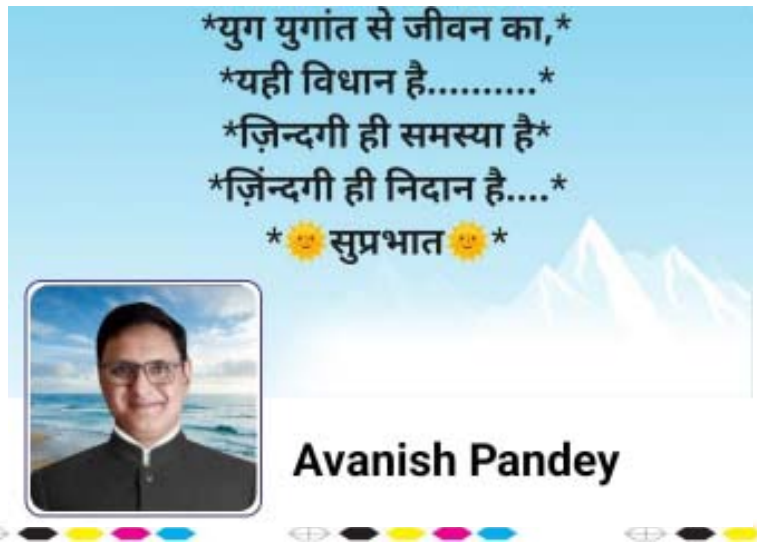

भाजपा को श्रेष्ठ बनाना है

भाजपा को श्रेष्ठ बनाना है,
तो कमल पकड़ कर चलिए ।
यदि भ्रष्टाचार मिटाना है,
तो कमल पकड़ कर चलिए ।
बाहर–भीतर गद्दारों,
से देश घिरा है भाई–
भारत की लाज बचाना है,
तो कमल पकड़ कर चलिए ।

रिपु तुमको लड़वाएंगे,मत जाति–पाति में बंटिए
जो बंटा सो कटा बाबू,मत जान–बूझकर कटिए

यह मातृभूमि है अपनी,यह देश हमारा अपना
मां के टुकड़े करने का खल देख रहे फिर सपना

बाहर से आइ लुटेरे, फिर बढ़ा रहे आबादी
ये ख्वाब देखते हैं नित,भारत मां की बरबादी

जयचंदों को निपटाना ,
तो कमल पकड़ कर चलिए।
इन सब को सबक सिखाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए ।

गाजा में कुछ होवे तो,इनकी जलती है बत्ती
ढाका में कुछ होवे तो फिर नहीं हीलती पत्ती

मालुम न पड़े इन सबके किनसे किनसे नाते हैं
जाकर विदेश कुछ कायर भारत को गरियाते हैं

गांधी, सुभाष,बिस्मिल से ये कायर कब डरते हैं
जो दुश्मन इस माटी के उनसे भी मिला करते हैं

जग भर में ध्वज फहराना,
तो कमल पकड़ कर चलिए ।
विकसित भारत बनवाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए।

हे सत्य सनातन वाले, अब देर नहीं हो जाए
भारत मां के रखवाले,अब देर नहीं हो जाए

हे राम–कृष्ण के प्यारे,अब देर नहीं हो जाए
करने में वारे–न्यारे अब देर नहीं हो जाए

हे राणा की संतानों,अब देर नहीं हो जाए
तुम वीर शिवा को जानों,अब देर नहीं हो जाए

यदि रामराज फिर लाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए।
दुनिया में धाक जमाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए।

तुम भूले पाकिस्तानी या भूले खालिस्तानी ?
तुम भूले गए दंगों को या भूले अफजल बानी ?

तुम भूल गए बाबर को जो कत्लेआम कराया?
औरंगजेब को भूले,जो बेटों को चुनवाया?

काशी, मथुरा,संभल को तुम कभी नहीं पाओगे
यदि भूल अयोध्या वाली बाबूजी दोहराओगे

यदि वक्फ बोर्ड निपटाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए।
श्गजवाश से देश बचाना,
तो कमल पकड़ कर चलिए।

-सुरेश मिश्र

आख़िर जाना है तुझे अकेला

बाहर देख न सुख शांति, अपना अन्तर्मन ही निहार
अन्तर्मुखी जब होगा तभी, आत्मा का होगा दीदार

मोह माया में फंसकर, मत बांधना माया की गठरी
विवेकशील बनकर चलना, जीवन की सीधी पटरी

चारों और देखो तो जैसे, दुनिया लगती हाट बाजार
हर कोई इसमें उलझा, दिन रह गए हों भले ही चार

कर्मों की कारोबारी में सबने, समझ बूझ को गंवाया
बंधन टूट सके न मन के, समय जाने का जब आया

जीवन का सारांश यही, ये आने और जाने का खेला
देखो जब तक जिंदा हो, दुनिया बड़ा ही सुन्दर मेला

न जाने कब पूरा हो जाए, जीवन चंद दिनों का डेरा
यहाँ जो पाया वो माया, नहीं यहाँ का कुछ भी तेरा

निर्बल हो जाएगी जिस दिन, पाँच तत्वों की काया
तेरे ही रिश्तेदार कर देंगे, खुद अपने से तुझे पराया

मोह के बंधन में बंधकर, जीवन न बन जाए झमेला
याद रहे ये सत्य सदा, आखिर जाना है तुझे अकेला

शांति

मुकेश कुमार मोदी, बीकानेर, राजस्थान

वैकुंठ एकादशी के अवसर पर श्री वेंकटेश देवस्थान में विश्वरूप का वैकुंठद्वार दर्शन

मुंबई। प्रतिवर्षानुसार धनुर्मास के अंतर्गत गिरगांव मुंबई फणसवाडी स्थित श्रीवेंकटेश देवस्थानम प्रांगण परिसर में वैकुंठ एकादशी शुक्रवार दिनांक 10/1/2025 को सृष्टि के अनंत अवतार के प्रतीक विश्वरूप का दर्शन होगा द्य देवस्थान के व्यवस्थापक सुरेश चौधरी ने यह जानकारी दी कि प्रातः 6.00 बजे से नारायण श्री वेंकटेश सहित श्रीदेवी व भूदेवी की आकर्षक सवारी निकाली जायेगी। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध त्यौहार पोंगल के पूर्व मनाये जाने वाले धनुर्मास के तहत यहां नारायण की पारम्परिक विधियों द्वारा अभिषेक,पूजा, आरती वैदिक विधान के अनुसार आयोजित किया जायेगा द्यइस अवसर पर प्रातः 6.00 बजे वैकुंठद्वार दर्शनार्थियों के लिए खोला जायेगा।

पूर्व महापौर स्व. आर. आर. सिंह की 87वीं जयंती पर मुलुंड में होगा सर्वदलीय नेताओं का जमावडा

मुंबई – मुंबई के पूर्व एवं प्रथम उत्तर भारतीय महापौर स्व आर आर सिंह की 87वीं जयंती पर माता की चौकी (गायक दिलीप सिंह डडवाल) का आयोजन शुक्रवार दिनांक 10.1.2025 को शाम 6बजे से आर. आर. सभागृह,आर. आर. एजुकेशनल ट्रस्ट मार्ग, म्हाडा, मुलुंड पूर्व पर आयोजित किया गया है। इस अवसर पर सर्व दलों के नेता सांसद वर्षा गायकवाड (अध्यक्ष मुंबई कांग्रेस).संजय दीना पाटील (सांसद),पूर्व सांसद रमेश दूबे, मनोज कोटक, पूर्व मंत्री कृपाशंकर सिंह,चंद्रकांत त्रिपाठी, मिहिर कोटेचा (विधायक),वीरेंद्र बक्षी,रामबक्ष सिंह, प्रेनिल नायर, राकेश शेट्टी प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित होकर आर. आर. सिंह के स्मृतियों को व्यक्त कर श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे। आयोजक डॉ. आर. आर. सिंह,बी. के. तिवारी, डॉ. बाबूलाल सिंह, मोहनलाल राज ने सभी श्रद्धालु जनों से इस अवसर पर उपस्थित होकर अपने प्रिय नेता का स्मरण एवं माता की चौकी का आनंद तथा महाप्रसाद ग्रहण करने का अनुरोध किया है।

मुंबई में बढ़ते प्रदुषण के विरोध में मुलुंड कांग्रेस का प्रदर्शन

मुंबई। मुंबई में बढ़ते हुए वायु प्रदुषण को रोकने में असफल महाराष्ट्र सरकार के विरोध में ईशान्य मुंबई जिला कांग्रेस, मुलुंड कांग्रेस 103, द्वारा सरदार तारा सिंह गार्डन, साइप्रस, मुलुंड प. पर राकेश राघवन के नेतृत्व में प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में मुंबई कांग्रेस के कार्याध्यक्ष चरण सिंह सप्रा,महासचिव सुनील गंगवानी, सचिव किशोर मुंडेकल, अयूब सय्यद, राजेश इंगले,डॉ. आर. आर. सिंह (वरिष्ठ कांग्रेस नेता),डॉ. सचिन सिंह (महासचिव उत्तर भारतीय सेल, महाराष्ट्र कांग्रेस),उत्तम गीते (कार्याध्यक्ष जिला कांग्रेस),कैलास पाटील, भरत सोनी (प्रवक्ता), अरविन्द यादव, विठ्ठल सातपुते (ब्लॉक अध्यक्ष,मुलुंड कांग्रेस), निर्मला सोनावणे, हेमंत ठाकुर ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर प्रदर्शन कारी श्वास लेना हमारा अधिकार, राज्य सरकार लापरवाह,वायु प्रदुषण, कंस्ट्रक्शन, ध्वनि प्रदुषण पर –रोक लगाओ, रोक लगाओ, प्रदुषण पर रोक लगाओ, मानव, वृक्ष, पशु पक्षियों की जान बचाओ नारे लगा रहे थे। इस अवसर पर हस्ताक्षर अभियान को मुलुंड के सुज्ञ नागरिकों का अच्छा प्रतिसाद मिला।

सम्पादकीय...

होंडा और निसान के विलय

होंडा और निसान के विलय का फैसला विश्व कार बाजार के तेजी से बदले रूप की एक मिसाल है। बदलाव के कारण हैरू कार उपभोक्ताओं के बीच ईवी की बढ़ी मांग और ईवी के बाजार में चीनी कंपनियों का छा जाना। कभी होंडा और निसान कंपनियां कार बाजार का ज्यादा हिस्सा हासिल करने के लिए एक दूसरे से होड़ करती थीं। लेकिन अब इन दोनों जापानी कंपनियों ने आपस में विलय का एलान किया है। यह असाधारण घटना है। असल में यह विश्व कार बाजार के तेजी से बदले रूप की एक मिसाल है। इस परिवर्तन के दो प्रमुख आयाम हैरू कार उपभोक्ताओं के बीच इलेक्ट्रिक से चलने वाली कारों (ईवी) की तेजी से बढ़ी मांग और ईवी के बाजार में चीन की कंपनियों–खासकर बीवाईडी का छा जाना। पांच साल पहले शायद ही ये कोई सोचता था कि निम्न श्रेणी की मैनुफैक्चरिंग से आगे बढ़ते हुए चीन कार के बाजार पर भी अपना दबदबा बनने लगेगा। लेकिन आज ऐसा हो चुका है। इससे जर्मनी और जापान की कार निर्माता तमाम बड़ी कंपनियां अपने को दबाव में महसूस कर रही हैं। इन कंपनियों की महारत पेट्रोल/ डीजल/ गैस से चलने वाली कारों के निर्माण में रही है। मगर विश्व बाजार में ऐसी कारों की मांग तेजी से घटी है। ईवी के क्षेत्र में इन कंपनियों ने प्रगति की है, लेकिन कीमत के मोर्चे पर वे पिट रही हैं। चीनी कारें उनकी तुलना में इतनी सस्ती हैं कि स्वाभाविक रूप से खरीदार उनकी तरफ खिंच जाते हैं। नतीजतन, जर्मनी की कंपनी फॉक्सवागन की मुसीबत की खबरें सुर्खियों में रही हैं। यही हाल जापान और दक्षिण कोरियाई कंपनियों का है। चीन का बड़ा बाजार तेजी से उनके हाथ से निकला है। अमेरिका और यूरोप में आयात शुल्क में भारी बढ़ोतरी कर सरकारों ने उन कंपनियों की मदद की है, लेकिन यह काफी साबित नहीं हुआ है। विलय की रणनीति भी शायद नाकाफी ही हो। होंडा ने कहा है कि विलय का लाभ 2030 से पहले नहीं मिलेगा। लेकिन तब तक तकनीक और आगे निकल चुकी होगी। असल सवाल यह है कि मूल्य प्रतिस्पर्धा में चीनी कंपनियों को मिले लाभ का जवाब जब तक ये कंपनियां नहीं ढूंढतीं, ऐसे उपाय अपर्याप्त बने रहेंगे। अभी तो विलय प्रस्ताव को शेयर धारकों से मंजूरी दिलाने और विलय के परिणामस्वरूप श्रमिकों की छंटनी आदि जैसी बड़ी चुनौतियों से निपटना ही बाकी है।

रिलीज से पहले राम चरण की शर्गेम चेंजरश को बड़ा झटका, पुष्पा 2 के बाद कोर्ट ने बदला ये नियम

नई दिल्ली। हैदराबाद के संध्या थिएटर्स में पुष्पा 2 की स्क्रीनिंग के दौरान हुए भगदड़ हादसे के बाद से साउथ सिनेमा अपनी फिल्मों के अलावा अन्य कारणों से भी चर्चा में बना हुआ है। सरकार और सिनेमा के बीच अब कानूनी हस्तक्षेप भी देखने को मिल रहा है, जिसके चलते आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने एक बड़ा फैसला ले लिया है। इस नियम के बदल जाने से साफतौर राम चरण की अपकमिंग मूवी गेम चेंजर पर असर पड़ता दिख सकता है। आइए इस लेख में जानते हैं कि आखिर पूरा मामला क्या है। साउथ सिनेमा में लंबे अरसे से देखा जा रहा है कि फिल्मों की रिलीज से 14 दिन पहले से ही मेकर्स टिकटों के प्राइज को बढ़ाने का दांव खेलते हैं। लेकिन अब इसकी समय सीमा को घटा दिया गया है। दरअसल दक्षिण भारतीय सिनेमा के ट्रेड एनालिस्ट मनोबाला विजयबालन ने इस मामले को लेकर अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर अहम जानकारी दी है।

मनमोहन सिंह की विरासत का मूल्यांकन, भारतीय नीतिगत परिदृश्य पर छोड़ी व्यापक छाप

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के बाद मध्य वर्ग से लेकर कारोबार जगत और औद्योगिक एवं राजनीतिक गलियारों में शोक जताया गया। खांटी नेता न होते हुए भी उन्होंने राजनीतिक मोर्चे पर इतना कुछ हासिल किया, जिसकी कुछ लोग सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। डा. सिंह एक बुद्धिजीवी भी थे और उन्होंने भारतीय नीतिगत परिदृश्य पर अपनी व्यापक छाप छोड़ी। हालांकि इसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि राजनीतिक पटल के शीर्ष पर बैठे लोग जिस प्रकार नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, उसमें डा. सिंह अपेक्षित रूप से असर नहीं छोड़ पाए। चाहे प्रधानमंत्री का दायित्व हो या फिर उससे पहले वित्त मंत्री का, उनकी भूमिका मुख्य रूप से वास्तविक राजनीतिक शक्ति से लैस दिग्गजों के सहायक–सलाहकार की ही रही, जिन्होंने स्वीकार्य नीतियों को नौकरशाही के जरिये लागू करने का काम किया। जब वह प्रधानमंत्री थे तो पूरी राजनीतिक शक्ति सोनिया गांधी के पास थी, जो उस समय तमाम निर्णायक फैसलों से जुड़ी रहीं। उनके पास ही वह शक्ति थी, जिससे वह मनमोहन सिंह को कोई भी फैसला लेने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ही उन्हें किसी निर्णय को लेने से रोक भी सकती थीं। इसी तरह जब डा. सिंह वित्त मंत्री थे, तब वस्तुतः प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने ही अर्थव्यवस्था के उदारीकरण को हरी झंडी दिखाई। यह एक विडंबना ही है कि राव को भारतीय इतिहास में वह सम्मान और स्थान नहीं मिला, जिसके वह सर्वथा सुपात्र थे। उन्होंने शीत युद्ध के बाद अस्थिरता वाले वैश्विक दौर में भारत को सही राह दिखाई और 6 दिसंबर, 1992 की घटना को लेकर उन पर चाहे जितने सवाल उठें, इससे उनकी विरासत संदिग्ध नहीं हो जाती। राजनीति में सक्रिय लोगों की यात्रा उतार–चढ़ाव वाले विभिन्न पड़ावों से होकर गुजरती है। बेशक राजनीतिक परिवारों से आने वालों की राह भी आसान नहीं रहती, लेकिन जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं होती, उनके लिए यह यात्रा और कठिन हो जाती है। जो किसी तरह के प्रत्यक्ष चुनाव के जरिये आगे बढ़ते हैं, वही असल राजनीतिक राह के पथिक बनते हैं। चुनावों के जरिये मिलने वाले राजनीतिक सबक ही किसी को खांटी नेता के रूप में ढालते हैं। उससे

उन्हें समझ आता है कि जनता की नब्ज को कैसे भांपना है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि ऐसे नेता जनता का भरोसा जीतने में सफल होते हैं, क्योंकि वे लंबे समय तक उनके साथ संवाद से जान जाते हैं कि लोगों के मन में क्या है और वे क्या चाहते हैं? वे लोगों के सुख–दुख के साथी बन जाते हैं। यह कुछ ऐसा अनुभव है, जिसे अकादमिक जगत के लोग, टेक्नोक्रेट और निजी क्षेत्र के पेशेवर शायद कभी अर्जित नहीं कर पाएं। इसलिए यह पूरी तरह उचित ही है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में वही लोग उच्च राजनीतिक पदों पर बैठने के योग्य हैं, जो लोगों का भरोसा जीत पाएं। प्रधानमंत्री के मामले में यह पहलू और भी उल्लेखनीय हो जाता है। यह ऐसा पद नहीं, जिसे कभी आउटसोर्सिंग से भरा जाना चाहिए। यह मनमोहन सिंह की उपलब्धियों, अनुभव और व्यक्तित्व का अवमूल्यन करने का प्रयास नहीं, बल्कि इसका सरोकार भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के व्यापक हित से जुड़ा है। लोग जनादेश के जरिये ही अपना भाग्य–विधाता चुनते हैं और ऐसा व्यक्ति किसी अन्य को अपने अधिकार नहीं सौंप सकता। भले ही वह व्यक्ति लंबे समय से राज्यसभा में ही क्यों न रहा हो। देश 2004 से 2014 के बीच इन्हीं स्थितियों का साक्षी रहा। जनादेश की यह कसौटी जवाहरलाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और नरेन्द्र मोदी तक लागू होती है। मोदी जनादेश के दम पर ही राजग का नेतृत्व कर रहे हैं। क्या यह उचित रहता कि वह पर्दे के पीछे से सक्रिय रहकर किसी पेशेवर को प्रधानमंत्री का पद सौंप देते? इस बिंदु पर विचार तक नहीं किया जा सकता, क्योंकि लोगों की ही यही अपेक्षा है कि जब तक उनकी चाहत है, तब तक मोदी ही नेतृत्व करें। निःसंदेह यह नहीं कहा जा सकता कि नेताओं या प्रधानमंत्री की राजनीतिक मजबूरियां या आग्रह नहीं होते। निःसंदेह ऐसा होता है और वे उन्हीं के दायरे में अपने विकल्प चुनते हैं। माना जाता है कि अटल बिहारी वाजपेयी जसवंत सिंह को वित्त मंत्री बनाना चाहते थे, लेकिन संघ परिवार के दबाव में ऐसा नहीं कर पाए। बहुत बाद में जाकर 2002 में वह जसवंत सिंह को वित्त मंत्रालय का जिम्मा सौंप सके। यह दर्शाता है कि तब सत्ता समीकरण अटलजी के अधिक अनुकूल हो गए थे। राजनीति का यही चरित्र और प्रकृति है। इसी तरह, स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक दौर में जवाहरलाल नेहरू को अपनी ही पार्टी के परंपरावादी तबके के दबाव से जूझना पड़ा, लेकिन बाद में चुनावी जीत के जरिये ही वह अपनी पकड़ मजबूत बनाने में सफल रहे। यही बात इंदिरा गांधी के बारे में कही जा सकती है, जिन्होंने कांग्रेस को दोफाड़ कर अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित किया। महान प्रशासक, रणनीतिक विशेषज्ञ, सैनिक, अकादमिक, उद्यमी, राजनयिक, कलाकार और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय लोग देश के प्रति अपने–अपने स्तर पर योगदान देते हैं। वे सम्मान और प्रतिष्ठा के पात्र हैं। इसके बावजूद उन्हें शीर्ष राजनीतिक पद की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए और यदि जनादेश प्राप्त लोग अपने हितों को देखते हुए उन्हें ऐसी कोई जिम्मेदारी सौंपते हैं तो फिर उस दौरान लिए गए अच्छे–बुरे फैसलों का दारोमदार भी उन्हीं राजनीतिक लोगों का होना चाहिए, जो उन्हें सत्ता सौंपते हैं। उन लोगों के बीच स्पष्ट रूप से अंतर किया जाए, जिन्हें चुनावी प्रक्रिया के जरिये लोगों का भरोसा प्राप्त होता है और जिन्हें जनादेश हासिल करने वाले तोहफे में सत्ता सौंप देते हैं। भारतीय संवैधानिक ढांचे और राजनीतिक प्रणाली की भावना ऐसी तोहफे वाली व्यवस्था में निहित नहीं है। अमेरिका जैसे देशों में तो यह असंभव सा है। डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति चुने गए हैं और यह जनादेश वह किसी और को हस्तांतरित नहीं कर सकते।

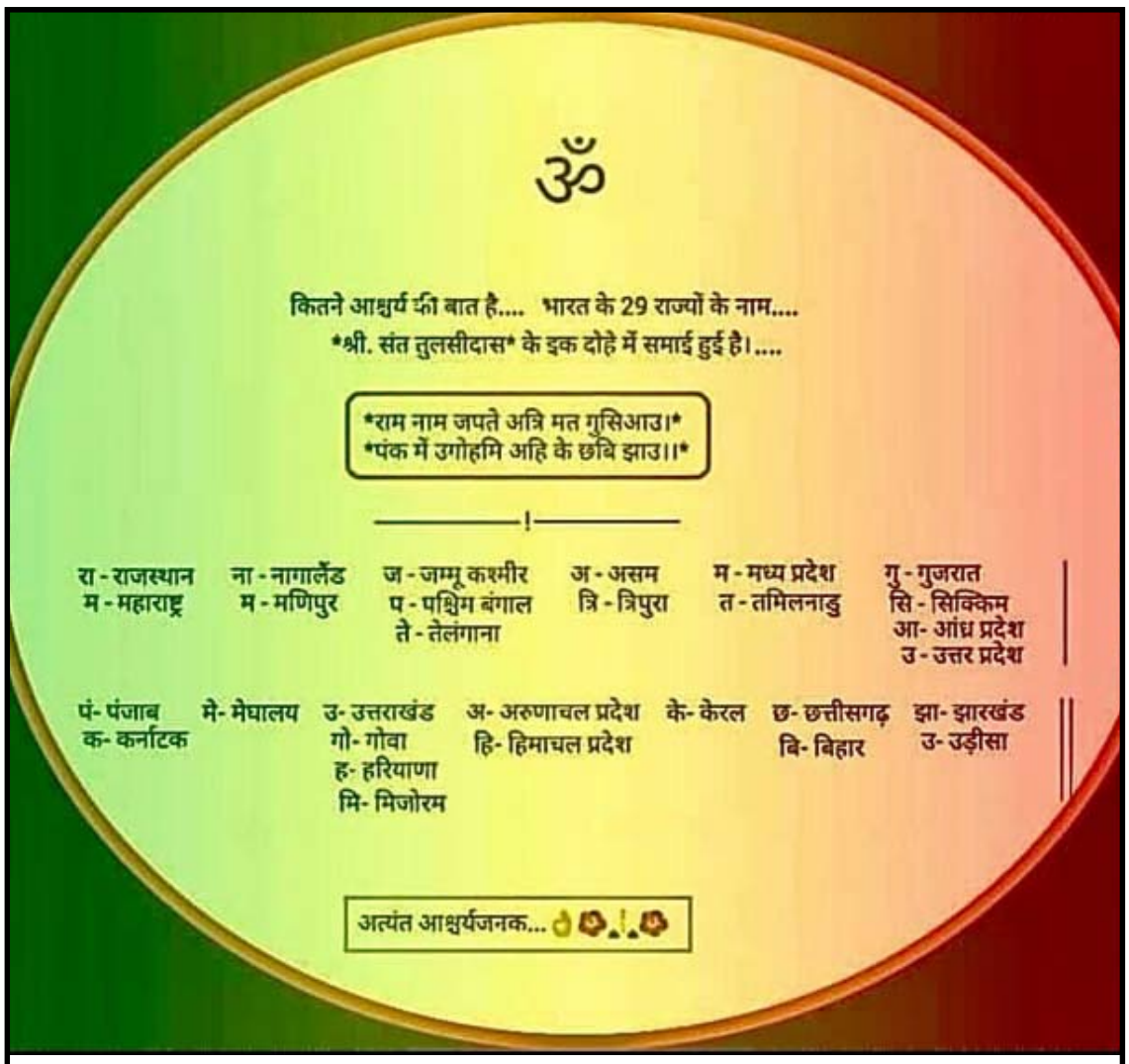

कहा गया हे भारत के सभी राज्य के नाम कैसे याद रखें इस राम नाम का एक श्लोक (चौंका) दिया सबको

बारिश सर्दी गर्मी आये चाहे बारी–बारी
नेगेटिव विचारों से मन बुद्धि को बचाएं
नई सुबह का स्वागतम्

हर मौसम हो खुशनुमा करें ऐसी तैयारी
अन्तर्मन में बिंदु रूप की स्मृति जगाएं
सुप्रभात सुस्वागतम्

शुरू हो जाएगा बड़हलगंज पुल का दूसरा लेन

आज से गोरखपुर-वाराणसी फोरलेन पर बेलीपार के पास भी देना होगा टोल टैक्स

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (6 Jan): गोरखपुर-वाराणसी फोरलेन मार्ग पर मंगलवार से सरयू पर बने पुल का दूसरा लेन भी आवागमन के लिए खोल दिया जाएगा तो वहीं बेलीपार के पास सीयर में बने टोल प्लाजा से गुजरने वाली गाड़ियों को टोल शुल्क भी देना होगा. सोमवार को बड़हलगंज पुल के दूसरे लेन के निरीक्षण के बाद एनएचएआइ ने इसपर आवागमन शुरू करने का निर्णय किया. साथ ही टोल प्लाजा का संचालन करने के लिए चयनित फर्म को भी मंगलवार से टोल टैक्स लेने की स्वीकृति दे दी. एक जनवरी से ही टोल प्लाजा पर टोल शुल्क लेने का ट्रायल शुरू कर दिया गया था, लेकिन बड़हलगंज पुल का दूसरा लेन शुरू नहीं हो पाने की वजह से पूरी तरह टोल शुल्क नहीं वसूला जा रहा था.

बेलीपार से सीयर में भी टोल टैक्स की वसूली शुरू हो जाने के बाद अब गोरखपुर से वाराणसी तक जाने में तीन जगहों पर टोल शुल्क देना होगा. इस मार्ग पर एक साल पहले से ही गाजीपुर के दादी ओर वाराणसी के कैथी में टोल वसूला जा रहा है.

बड़हलगंज बाईपास के पास सरयू नदी पर बने पुल के दूसरे लेन का काम भी पूरा हो जाने के साथ ही सात साल बाद गोरखपुर-वाराणसी फोरलेन का काम भी अब पूरा हो गया है. सिर्फ छह स्थानों पर मंदिर, स्कूल आदि का निर्माण नहीं हट पाने की वजह से सर्विस लेन का काम बाकी है. पुल के एक लेन पर 18 अप्रैल से ही वाहनों का संचालन हो रहा है. दूसरे पुल पर भी आवागमन शुरू हो जाने से जाम से राहत तो मिलेगी ही मऊ, गाजीपुर, आजमगढ़, वाराणसी समेत कुछ अन्य जिलों का सफर भी आसान हो जाएगा.

फोरलेन पर बेलीपार और कसिहार चौराहे के बीच में सीयर गांव के समीप बनाए गए टोल प्लाजा पर दरों सहित अन्य सूचना बोर्ड पहले ही लगाए जा चुके हैं. स्टाफ की तैनाती भी हो गई है. सोमवार को एनएचएआइ के परियोजना निदेशक ललित पाल ने बड़हलगंज बाईपास पर पुल के दूसरे लेन का निरीक्षण किया. उन्होंने इस लेन पर भी मंगलवार से आवागमन शुरू करने के साथ ही सीयर के पास बने टोल प्लाजा पर टोल शुल्क वसूलने की भी फर्म को अनुमति दे दी.

यह है रेट लिस्ट

वाहन	शुल्क	वापसी
प्राइवेट चार पहिया वाहन	85	125
निजी भार वाहन	135	205
चार चक्का भार वाहन व बस	285	425
आठ चक्का वाहन	310	465
12 चक्का वाहन	445	670
16 चक्का वाहन	545	815

65.620 किमी मार्ग की लंबाई

1030 करोड़ स्वीकृत लागत

982.61 करोड़ अवमुक्त धनराशि

972.12 करोड़ व्यय धनराशि

10 अप्रैल 2017 कार्य प्रारंभ

31 दिसंबर 2024 कार्य पूर्ण करने की अवधि

गोरखपुर-वाराणसी फोरलेन पर बड़हलगंज में सरयू नदी पर बने फोरलेन पुल के दूसरे लेन को आवागमन के लिए मंगलवार से खोल दिया जाएगा. इससे आवागमन सुगम हो जाएगा. साथ ही बेलीपार के पास बने टोल प्लाजा पर भी मंगलवार से टोल शुल्क लिया जाएगा.

-**ललित प्रताप पाल**, परियोजना निदेशक, एनएचएआई, गोरखपुर

आरएसएस द्वारा 1925 से पल्लवित और पोषित की जा रही मुस्लिम, दलित और आदिवासी विरोधी जहरीली साम्प्रदायिक विचारधारा से संस्कारित और प्रेरित भाजपा, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बड़ी तेजी से दो रणनीतियों पर एक साथ काम कर रही है।

पहली रणनीति के तहत, इतिहास के भूले बिसरे और भर चुके या भरते जा रहे जख्मों को कुरेदते हुए भारत की आम जनता के दिलोदिमाग में नफरत और हिंसा के बीज बोने वाले थोड़े सच और ज्यादा झूठ के कॉकटेली हथकंडों के जरिये, जहरीले साम्प्रदायिक धुंए के गुबार उठाना और फिर उसके पीछे छिपकर, दूसरी रणनीति को अंजाम देते हुए,आजादी मिलने के बाद खड़ी की गई देश की आधारभूत और जनकल्याणकारी संस्थाओं को निजी कंपनियों के हवाले कर देना ताकि जनता का ध्यान इस देशबेचू नीति से हटकर साम्प्रदायिक जहर की घुटन से देश को बचाने में ही लगा रहे।

एयर इंडिया, बीएसएनएल आदि का निजीकरण तो एक झलक मात्र है।

देश की सबसे बड़ी जनकल्याणकारी आधारभूत रेल सेवा, मोदी के राज में अब जनकल्याणकारी, सस्ती और सुलभ शासकीय रेल सेवा न रहकर बड़ी तेजी से निजी कंपनियों का निवाला बनते जा रही है।

एक तेजस ट्रेन से शुरू हुई रेल सेवा के निजीकरण की देशबेचू योजना के बाद सरकार की यह घोषणा भी आई कि सरकार देश के 100 रेलमार्गों पर 150 निजी तेजस ट्रेनें चलाने वाली है।

फिर बाकी बची सरकारी रेल सेवाओं के यात्री किराए बढ़ाकर और जनसुविधाएं घटाकर, उन रेलसेवाओं को खत्म करके उन्हें भी धीरे धीरे निजी कंपनियों के हवाले करना ही है।

मोदी सरकार का दूसरा निशाना सरकारी बैंक हैं। बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके उन्हें आम जनता के हित में सेवाएं देने वाली बैंकिंग व्यवस्था भी रेल सेवा की तरह कांग्रेस की ही देन है।

और कांग्रेस से आरएसएस/बीजेपी सरकार की अमर्यादित और कुतर्की नफ़रत इस हद तक है कि कांग्रेस को ख़त्म करने की हवस, कांग्रेस द्वारा स्थापित तमाम जनकल्याणकारी आधारभूत संरचनाओं को तहस नहस करके भी पूरी करने से,ये सरकार बाज नहीं आने वाली है।

मोदीराज में बैंकों के तेजी से बढ़ रहे एनपीए,लाखों करोड़ों के महाघोटालों, आरबीआई के रिज़र्व फंड को भी हड़पने की सरकारी हवस आदि घटनाएं चीख चीख कर ऐलान कर रही हैं कि सरकारी बैंकों का भी निजीकरण होगा ही होगा।

और इन सबसे ऊपर हैं शिक्षा और स्वास्थ्य की आधारभूत सरकारी सेवाएं जिनके ऊपर मोदी सरकार का खर्च ऊंट के मुंह में जीरे से भी कम है।

2020 में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का रिपोर्ट कार्ड जारी हुआ था जिसके मुताबिक मोदी सरकार 2025 तक आधारभूत ढांचे पर 102 लाख करोड़ रुपए खर्च करने वाली है लेकिन इस महा राशि में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में शायद कुछ भी खर्च नहीं होने वाला है।

उस रिपोर्ट कार्ड में वित्तमंत्री ने ये भी साफ साफ बता ही दिया था कि102लाख करोड़ रुपए खर्च करने के साथ साथ 2025 तक इन आधारभूत ढांचों में मोदी सरकार निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी भी बढ़ाने वाली है।

मतलब ये कि सरकारी पैसे खर्च करके निजी कंपनियों के स्वागत और आगमन के लिए कालीन भी बिछाना है इस सरकार को!

बीजेपी शिक्षा और स्वास्थ्य का बुनियादी सरकारी ढांचा भी निजी कंपनियों के हवाले करने के पक्ष में लामबंद है।

भारत की 67 सालों की गौरवशाली उपलब्धियों को तहस नहस करके, बड़ी मेहनत से खड़े किए गए आधारभूत सरकारी ढांचों को एक एक करके निजी कंपनियों के हवाले करने वाली मोदी सरकार की करतूतों और देश को बेच देने के देशद्रोही पाप में क्या कोई फर्क नजर आता है?

मोदीजी के पहले जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं, उनमें से किसीने भी कभी ये नहीं कहा कि, श्मैं देश नहीं बिकने दूंगा।श

लेकिन मोदीजी ऐसा बार बार कहकर श्चोर की दाढ़ी में तिनकाश वाली कहावत को ही चरितार्थ करते रहते हैं।

बकौल दुष्यंतः–

कल लहू से तरबतर थे पांव, इसके बावजूद,
मेरे होठों पर कभी ऐसा कोई शिकवा न था!
कुछ कुहांसा था मगर वह इस धुएं जैसा न था।

अनेक शहंशाहों ने हाजिरी दी ख्वाजा के दरबार में

ख्वाजा गरीब नवाज के 813वें उर्स के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 4 जनवरी को चादर भेजेंगे। केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू उनकी तरफ से चादर लेकर दरगाह आएंगे। इस मौके पर ख्याल आता है कि दुनिया में कितने ही राजा, महाराजा, बादशाहों के दरबार लगे और उजड़ गए, मगर ख्वाजा साहब का दरबार आज भी शान–ओ–शोकत के साथ जगमगा रहा है। उनकी दरगाह में मत्था टेकने वालों की तादात दिन–ब–दिन बढ़ती ही जा रही है। गरीब नवाज के दर पर न कोई अमीर है न गरीब। न यहां जात–पात है, न मजहब की दीवारें। हर आम–ओ–खास यहां आता है। हिंदुस्तान के अनेक शहंशाहों ने बार–बार यहां आ कर हाजिरी दी है।

बादशाह अकबर शहजादा सलीम के जन्म के बाद सन् 1570 में यहां आए थे। अपने शासनकाल में 25 साल के दरम्यान उन्होंने लगभग हर साल यहां आ कर हाजिरी दी। बादशाह जहांगीर अजमेर में सन् 1613 से 1616 तक यहां रहे और उन्होंने यहां नौ बार हाजिरी दी। गरीब नवाज की चौखट पर 11 सितंबर 1911 को विक्टोरिया मेरी क्वीन ने भी हाजिरी दी। इसी प्रकार देश के अनेक राष्ट्रपति और प्रधानमंत्रियों ने यहां जियारत कर साबित कर दिया है कि ख्वाजा गरीब नवाज शहंशहों के शहंशाह हैं। ख्वाजा साहब के दरगार में मुस्लिम शासकों ने सजदा किया तो हिंदू राजाओं ने भी सिर झुकाया है। हैदराबाद रियासत के किशनप्रसाद पुत्र की मुराद लेकर यहां आए और आम आदमी की तरह सुबकते रहे। ख्वाजा साहब की रहमत से उन्हें औलाद हुई और उसके बाद पूरे परिवार के साथ यहां आए। उन्होंने चांदी के चंवर भेंट किए, सोने–चांदी के तारों से बनी चादर पेश की और बेटे का नाम रखा ख्वाजा प्रसाद। जयपुर के मानसिंह कच्छावा तो ख्वाजा साहब की नगरी में आते ही घोड़े से उतर जाते थे। वे पैदल चल कर यहां आ कर जियारत करते, गरीबों को लंगर बंटवाते और तब जा कर खुद भोजन करते थे। राजा नवल किशोर ख्वाजा साहब के महाराजा मुरीद थे और यहां अनेक बार आए। मजार शरीफ का दालान वे खुद साफ करते थे। एक ही वस्त्र पहनते और फकीरों की सेवा करते। रात में फर्श पर बिना कुछ बिछाए सोते थे। उन्होंने ही भारत में कुरआन का पहला मुद्रित संस्करण छपवाया। जयपुर के राजा बिहारीमल से लेकर जयसिंह तक कई राजाओं ने यहां मत्था टेका, चांदी के कटहरे का विस्तार करवाया। मजार के गुंबद पर कलश चढ़ाया और खर्चे के लिए जागीरें भेंट कीं। महादजी सिंधिया जब अजमेर में शिवालय बनवा रहे थे तो रोजाना दरगाह में हाजिरी देते थे। अमृतसर गुरुद्वारा का एक जत्था यहां जियारत करने आया तो यहां बिजली का झाड़ दरगाह में पेश किया। इस झाड़ को सिख श्रद्धालु हाथीभाटा से नंगे पांव लेकर आए। जोधपुर के महाराज मालदेव, मानसिंह व अजीत सिंह, कोटा के राजा भीम सिंह, मेवाड़ के महाराणा पृथ्वीराज आदि का जियारत का सिलसिला इतिहास की धरोहर है। बादशाह जहांगीर के समय राजस्थानी के विख्यात कवि दुरसा आढ़ा भी ख्वाजा साहब के दर पर आए। जहांगीर ने उनके एक दोहे पर एक लाख पसाव का नकद पुरस्कार दिया, जो उन्होंने दरगाह के खादिमों और फकीरों में बांट दिया। गुरु नानकदेव सन् 1509 में ख्वाजा के दर आए। मजार शरीफ के दर्शन किए, दालान में कुछ देर बैठ कर ध्यान किया और पुष्कर चले गए।

अंग्रेजों की खिलाफत का आंदोलन चलाते हुए महात्मा गांधी सन् 1920 में अजमर आए। उनके साथ लखनऊ के फिरंगी महल के मौलाना अब्दुल बारी भी आए थे। मजार शरीफ पर मत्था टेकने के बाद गांधीजी ने दरगाह परिसर में ही अकबरी मस्जिद में आमसभा को संबोधित किया था। उनके भाषण एक अंश था– हम सब भारतीय हैं, हमें अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराना है, लेकिन शांति से, अहिंसा से। आप संकल्प करें... दरगाह की पवित्र भूमि पर आजादी के लिए प्रतिज्ञा करें... ख्वाजा साहब का आशीर्वाद लें। इसके बाद वे खादिम मोहल्ले में भी गए। स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने भी दरगाह की जियारत की और यहां दालान में सभा को संबोधित किया। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू व उनकी पत्नी विजय लक्ष्मी पंडित और संत विनोबा भावे भी यहां आए थे। देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भी कई बार दरगाह आईं। उनके साथ राजीव गांधी व संजय भी आए, मगर बाद में राजीव गांधी अकेले भी आए। इसी प्रकार सोनिया गांधी भी दरगाह जियारत कर चुकी हैं। देश के अन्य प्रधानमंत्री, राज्यपाल व मुख्यमंत्री आदि भी यहां आते रहते हैं। पाकिस्तान व बांग्लादेश के प्रधानमंत्री भी यहां आ कर दुआ मांग चुके हैं।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में पत्रकार मुकेश चंद्राकर की निर्मम हत्या को लेकर रोहतास के पत्रकारों ने दी श्रद्धांजलि,साथ दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की हुई मांग

डेहरी/रोहतास। छत्तीसगढ़ के बीजापुर के स्थानीय एवं चर्चित युवा पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या भ्रष्टाचार के खिलाफ खबर दिखाने पर असामाजिक तत्वों के द्वारा कर दी गई थी। मुकेश चंद्राकर के द्वारा बीजापुर,बस्तर सहित अन्य क्षेत्रों में निष्पक्षता एवं निर्भीकता से जनता व आदिवासियों की आवाज बनकर खबर को चलाया जाता था। उनकी निर्मम हत्या से पूरे देश में पत्रकारों में काफी आक्रोश देखा जा रहा है। इस बीच रोहतास जिला के डेहरी में पत्रकारों के द्वारा दिवंगत पत्रकार मुकेश चंद्राकर की तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। तथा हाथों में कैंडल लेकर हत्या करने वाले को फांसी देने तथा दिवंगत

पत्रकार के परिजन को मुआवजा सहित सरकारी नौकरी देने की मांग की गई। मौके पर मौजूद पत्रकार हिमांशु कुमार ने कहा कि देश में पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर कोई विशेष कानून नहीं है,वही महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ में कानून है भी तो उसका अपराधियों और भ्रष्टाचारियों के अंदर कोई भय नहीं, वहीं पूरे देश में पत्रकार निष्पक्षता से भ्रष्टाचार के खिलाफ खबर चलाता है। लोगों की आवाज बनता है किंतु पत्रकार की सुरक्षा की जिम्मेवारी कौन लेगा। वही इस बीच जितेंद्र तिवारी,रमेश कुमार, अनिल कुमार कौशल, विकास कुमार,सोनू कुमार,शशांक केतन, अयान खान सहित अन्य पत्रकार मौजूद रहे हैं।

सबसे प्रेम करो और किसी से घृणा मत करो.....

हज़रत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती (र.अ.) का अंतिम प्रवचन सबसे प्रेम करो और किसी से घृणा मत करो. शांति की सिर्फ़ बातें करने से कुछ नहीं होगा. ईश्वर और धर्म की सिर्फ़ बातें करने से कुछ नहीं होगा. अपनी सारी छिपी हुई शक्तियों को बाहर निकालो और अपनी अमर आत्मा की पूरी महिमा को प्रकट करो. शांति और आनंद से भरपूर रहो और जहाँ कहीं भी हो और जहाँ भी जाओ, उन्हें बिखेर दो. सत्य की धधकती हुई आग बनो, प्रेम का एक सुंदर फूल बनो और शांति का सुखदायक मरहम बनो. अपने आध्यात्मिक प्रकाश से अज्ञानता के अंधकार को दूर करो; कलह और युद्ध के बादलों को हटाओ और लोगों के बीच सद्भावना, शांति और सद्भाव फैलाओ. ईश्वर के अलावा किसी से कोई मदद, दान या उपकार मत मांगो. राजाओं के दरबार में कभी मत जाओ, लेकिन अगर कोई ज़रूरतमंद और गरीब, विधवा और अनाथ तुम्हारे दरवाज़े पर आए तो उसे आशीर्वाद देने और उसकी मदद करने से कभी इनकार मत करो. यह आपका मिशन है, लोगों की सेवा करना... इसे कर्तव्यनिष्ठा और साहस के साथ पूरा करें, ताकि मैं, आपके पीर–ओ–मुर्शिद के रूप में, क़यामत के दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर और सिलसिले में हमारे पवित्र पूर्वजों के सामने आपकी किसी भी कमी के लिए शर्मिंदा न होऊं।

अपने देशवा पे गुमान बा....

हमके अपने देशवा पे राजा जी गुमान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।

देशवा आजाद कइनै मिलिके ललनवाँ,
दिहलैं लुटाई भगत फँसिया पे जनवाँ।
नदीभर खून बहल ओकर ई निशान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।
हमके अपने देशवा पे राजा जी गुमान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।

होंठवा पे गंगा देखा, हथवा तिरंगा,
कउनों नाहीं देश लेला हमसे ऊ पंगा।
खेतवा किसान खड़ा, सीमा पे जवान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।
हमके अपने देशवा पे राजा जी गुमान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।

कब्भों न वीरान होई रहिया कुर्बानी कै,
लिखल जाई फिर से कहानी ई जवानी कै।
येही मटिया की खुशबू में अपनों परान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।
हमके अपने देशवा पे राजा जी गुमान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।

महकै लै सुबह–शाम, महके लै शाम हो,
निंदिया में नाहीं केहू करेला आराम हो।
खूनवा से लिख देब करी का बखान हो,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।
हमके अपने देशवा पे राजा जी गुमान बा,
अक्खी पूरी दुनिया में भारत महान बा।

गीतकार
रामकेश एम. यादव
'सरस' मुंबई,

महत्वपूर्ण सूचना

सभी साधकों के शुभ संकल्प और परम पूज्य दादा गुरुजी के आशीर्वाद से पूज्यश्री को इलाज के लिए राहत मिली है।

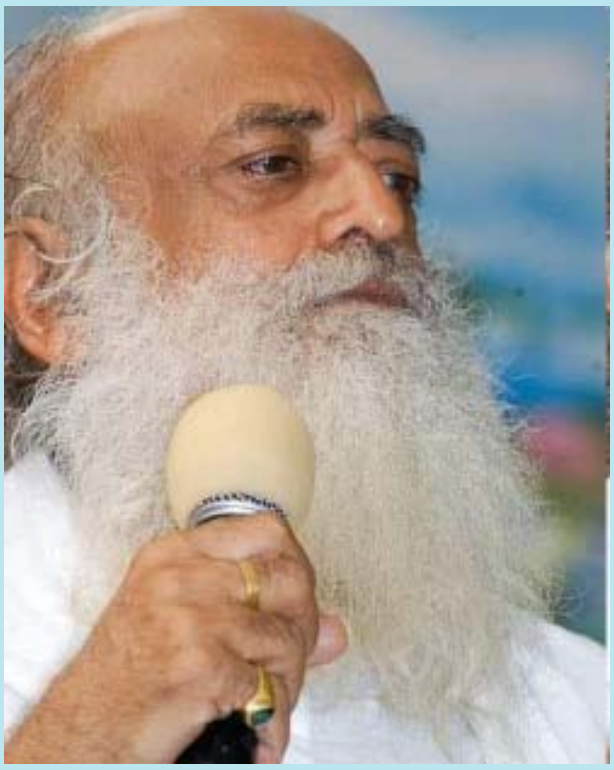

न्यायपालिका को खूब साधुवाद ! इसके बाद जोधपुर हाई कोर्ट में भी सजा स्थगन (SOS) की प्रक्रिया चलेगी, इसलिए साधक अभी धैर्य बनाये रखें। हम सबका पहला उद्देश्य गुरुजी का उत्तम स्वास्थ्य है।

अभी बापूजी को इलाज के लिए जो राहत मिली है इसका पूज्यश्री को पूरा पूरा लाभ मिले, इसमें हम सभीको सहयोग देना है। हम कोई भी अव्यवस्था नहीं करें, कानून व्यवस्था भंग हो इस तरह की कोई भी चेष्टा नहीं करें।

आपकी भावनाओं का हम सब सम्मान करते हैं लेकिन आप सबने इतना धैर्य रखा है तो थोड़ा और धीरज रखें । हमारे किसी भी कार्य से हम गुरुजी के लिए असुविधा या स्वास्थ्य–लाभ में विघ्नरूप न बनें, इसकी हमको सावधानी रखनी है और दूसरों को भी सावधान करें ।

पूज्यश्री हमको सदा बताते आये हैं:
"बहुत गयी थोड़ी रही, व्याकुल मन मत हो। धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खो ।।"
संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च ।
वश्यस्य पुत्रोर्थकरी च विद्या
षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।

भावार्थ – धन का नियमित आगम हो, शरीर स्वस्थ व रुग्ण रहित हो, पत्नी सुंदर व प्रिय बोलने वाली हो, पुत्र आज्ञाकारी हो और अर्जित विद्या व ज्ञान सार्थक व जीवन उन्नति में सहयोगी हो, मनुष्य के यही छः लौकिक जीवन सुख हैं।

-सुप्रभात

कवियों अपना धर्म निभाओ ।
कविता से परिवर्तन लाओ ।।

गली गली में शहर शहर में।
कविता का संदेश सुनाओ।।

कहां खोट है कहां गलत है ।
दौड़ दौड़ सबको समझाओ।।

सही आदमी कैसा होगा ।
उसका बढ़िया चित्र बनाओ।।

अंधापन कैसे आया है।
देखो समझो अकल लगाओ।।

कविता की भाषा में कहकर।
सबको बढ़िया राह दिखाओ।।

जीवन का विज्ञान समझकर ।
जीवन में हरियाली लाओ।।

राष्ट्र धर्म का गाना गाकर ।
अपना प्यारा देश बचाओ ।।

मानवता को आगे रखकर ।
सबके सुख की बात चलाओ।।

सत्ता को सन्मार्ग दिखाकर।
अपने मन में खुशी मनाओ ।।

कविता की उत्तम भाषा में ।
लोक धर्म का मंगल गाओ ।।

गति पर अपनी नजर टिकाकर।
सही दिशा में चलते जाओ ।।

धूम मचा दो तुम कविता में ।
मौसम को अनुकूल बनाओ।।

कवियों अपना धर्म निभाओ।
कविता से परिवर्तन लाओ ।।

-अन्वेषी

अब पता लगा है कि, ढाई अक्षर हैं क्या ?

ढाई अक्षर के 'ब्रह्मा' और, ढाई अक्षर की 'सृष्टि'.
ढाई अक्षर के 'विष्णु' और ढाई अक्षर की 'लक्ष्मी'.
ढाई अक्षर की 'दुर्गा' और ढाई अक्षर की 'शक्ति'.
ढाई अक्षर की 'श्रद्धा' और ढाई अक्षर की 'भक्ति'.
ढाई अक्षर का 'त्याग' और ढाई अक्षर का 'ध्यान'.
ढाई अक्षर की 'इच्छा' और ढाई अक्षर की 'तुष्टि'.
ढाई अक्षर का 'धर्म' और ढाई अक्षर का 'कर्म'.
ढाई अक्षर का 'भाग्य' और, ढाई अक्षर की 'व्यथा'.
ढाई अक्षर का 'ग्रन्थ' और ढाई अक्षर का 'सन्त'.
ढाई अक्षर का 'शब्द' और ढाई अक्षर का 'अर्थ'.
ढाई अक्षर का 'सत्य' और ढाई अक्षर की 'मिथ्या'.
ढाई अक्षर की 'श्रुति' और ढाई अक्षर की 'ध्वनि'.
ढाई अक्षर की 'अग्नि' और ढाई अक्षर का 'कुण्ड'.
ढाई अक्षर का 'मन्त्र' और ढाई अक्षर का 'यन्त्र'.
ढाई अक्षर की 'श्वांस' और ढाई अक्षर के 'प्राण'.
ढाई अक्षर का 'जन्म' और ढाई अक्षर की 'मृत्यु'.
ढाई अक्षर की 'अस्थि' और ढाई अक्षर की 'अर्थी'.
ढाई अक्षर का 'प्यार' और ढाई अक्षर का 'युद्ध'.
ढाई अक्षर का 'मित्र' और, ढाई अक्षर का 'शत्रु'.
ढाई अक्षर का 'प्रेम' और ढाई अक्षर की 'घृणा'.

'जन्म' से लेकर 'मृत्यु' तक हम, बंधे हैं ढाई अक्षर में.
हैं ढाई अक्षर ही 'वक़्त' में और ढाई अक्षर ही 'अन्त' में.

महापुरुषों की गूढ़ रहस्यों से भरी भाषा को शत-शत नमन

नववर्ष के उपलक्ष्य में काव्यसृजन द्वारा कविगोष्ठी संपन्न

मुंबई। साहित्यिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक राष्ट्रीय संस्था काव्यसृजन के तत्वाधान में नववर्ष के उपलक्ष्य में रविवार दिनांक 5 जनवरी 2025 को श्रीराम जानकी मंदिर प्रांगण, लाल बहादुर शास्त्री नगर साकीनाका मुंबई में काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार संजय द्विवेदी ने किया एवं मुख्य अतिथि के रूप में कमलेश राय तथा नव नियुक्त भाजपा उपाध्यक्ष चाँदीवली विधान सभा मुम्बई सर्वेश सिंह उपस्थित थे। मंच का संचालन प्रोफेसर अंजनी कुमार द्विवेदी ने किया तथा आयोजन संस्था अध्यक्ष श्रीधर मिश्र के साथ समस्त काव्य सृजन परिवार ने किया।काव्य गोष्ठी का शुभारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कवि एवं पत्रकार विनय शर्मा दीप ने माँ सरस्वती की वंदना से काव्य पाठ का शुभारंभ किया।राम जानकी मंदिर प्रांगण में काव्यसृजन द्वारा प्रथम आयोजन किया गया। इसलिए प्रथम गोष्टी प्रभु श्री राम एवं जानकी को समर्पित रही।उपस्थित साहित्यकारों में लाल बहादुर यादव कमल, आनंद पांडे केवल, डॉ प्रमोद पल्लवित, राजेंद्र प्रसाद शर्मा, कलीम शेख, संस्थापक पंडित शिवप्रकाश जमदग्निपुरी, सुरेंद्र कुमार तिवारी, प्रशांत मिश्रा, अरुण दुबे, कल्पेश यादव, रितेश गौड़, वीरेंद्र यादव, राकेश मिश्रा, शैलेंद्र तिवारी, अनूप बिंदल, डॉ नीलिमा पाण्डेय, प्रोफेसर कुसुम तिवारी, नीतू पांडे क्रांति, लक्ष्मीकांत कमलनयन,कृतायन पाण्डेय, कृष्ण कुमार गुप्ता एवं श्याम सुंदर पांडे मुख्य रूप से उपस्थित थे।अपरोक्ष रूप से हौंसिला प्रसाद अन्वेषी,मोतीलाल बजाज व झुनझुन वाला कालेज के पूर्व प्रोफेशर भी अपनी रचना के माध्यम से उपस्थित रहेद्यउपस्थित सभी लोगों ने एक से बढ़कर एक गीत, गजल, छंद, मुक्तक से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि द्वय कमेलेश राय (मुन्ना) व सर्वेश सिंह ने आयोजन की मुक्त कंठ से सराहना की अध्यक्ष संजय द्विवेदी जी ने सभी की रचनाओं पर प्रकाश डाला। सम्मान मूर्ति सर्वेश सिंह का सम्मान शाल श्रीफल पुष्पहार पुष्पगुच्छ व पं. जमदग्निपुरी द्वारा रचित पुस्तक अवधी देशज बानी से कियाद्यसाथ में कमलेश राय व दयानंद विद्यालय के मुख्याध् यापक का भी उसी भाँति सम्मान कियाद्यअंत में लाल बहादुर यादव कमल ने सभी का आभार व्यक्त किया।राष्ट्रगान के साथ गोष्ठी पूर्णता को प्राप्त की।

मैं जितने साल जी चुका हूँ, उससे अब कम साल मुझे जीना है, यह समझ आने के बाद मुझमें यह परिवर्तन आया है

१. किसी प्रियजन की विदाई से अब मैं रोना छोड़ चुका हूँ क्योंकि आज नहीं तो कल मेरी बारी है।

२. उसी प्रकार,अगर मेरी विदाई अचानक हो जाती है, तो मेरे बाद लोगों का क्या होगा, यह सोचना भी छोड़ दिया है क्योंकि मेरे जाने के बाद कोई भूखा नहीं रहेगा और मेरी संपत्ति को कोई छोड़ने या दान करने की ज़रूरत नहीं है।

३. सामने वाले व्यक्ति के पैसे, पावर और पोजीशन से अब मैं डरता नहीं हूँ।

४. खुद के लिए सबसे अधिक समय निकालता हूँ। मान लिया है कि दुनिया मेरे कंधों पर टिकी नहीं है। मेरे बिना कुछ रुकने वाला नहीं है।

५. छोटे व्यापारियों और फेरीवालों के साथ मोल–भाव करना बंद कर दिया है। कभी–कभी जानता हूँ कि मैं ठगा जा रहा हूँ, फिर भी हँसते–मुस्कुराते चला जाता हूँ।

६. कबाड़ उठाने वालों को फटी या खाली तेल की डिब्बी वैसे ही दे देता हूँ, पच्चीस–पचास रुपये खर्च करता हूँस जब उनके चेहरे पर लाखों मिलने की खुशी देखता हूँ तो खुश हो जाता हूँ।

७. सड़क पर व्यापार करने वालों से कभी–कभी बेकार की चीज़ भी खरीद लेता हूँ।

८. बुजुर्गों और बच्चों की एक ही बात कितनी बार सुन लेता हूँ। कहने की आदत छोड़ दी है कि उन्होंने यह बात कई बार कही है।

९. गलत व्यक्ति के साथ बहस करने की बजाय मानसिक शांति बनाए रखना पसंद करता हूँ।

१०. लोगों के अच्छे काम या विचारों की खुले दिल से प्रशंसा करता हूँ। ऐसा करने से मिलने वाले आनंद का मजा लेता हूँ।

११. ब्रांडेड कपड़ों, मोबाइल या अन्य किसी ब्रांडेड चीज़ से व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना छोड़ दिया है। व्यक्तित्व विचारों से निखरता है, ब्रांडेड चीज़ों से नहीं, यह समझ गया हूँ।

१२. मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ जो अपनी बुरी आदतों और जड़ मान्यताओं को मुझ पर थोपने की कोशिश करते हैं। अब उन्हें सुधारने की कोशिश नहीं करता क्योंकि कई लोगों ने यह पहले ही कर दिया है।

१३. जब कोई मुझे जीवन की दौड़ में पीछे छोड़ने के लिए चालें खेलता है, तो मैं शांत रहकर उसे रास्ता दे देता हूँ। आखिरकार, ना तो मैं जीवन की प्रतिस्पर्धा में हूँ, ना ही मेरा कोई प्रतिद्वंद्वी है।

१४. मैं वही करता हूँ जिससे मुझे आनंद आता है। लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे, इसकी चिंता छोड़ दी है। चार लोगों को खुश रखने के लिए अपना मन मारना छोड़ दिया है।

१५. फाइव स्टार होटल में रहने की बजाय प्रकृति के करीब जाना पसंद करता हूँ। जंक फूड की बजाय बाजरे की रोटी और आलू की सब्जी में संतोष पाता हूँ।

१६. अपने ऊपर हजारों रुपये खर्च करने की बजाय किसी जरूरतमंद के हाथ में पाँच सौ हजार रुपये देने का आनंद लेना सीख गया हूँ। और हर किसी की मदद पहले भी करता था और अब भी करता हूँ।

१७. गलत के सामने सही साबित करने की बजाय मौन रहना पसंद करने लगा हूँ। बोलने की बजाय चुप रहना पसंद करने लगा हूँ। खुद से प्यार करने लगा हूँ।

१८. मैं बस इस दुनिया का यात्री हूँस मैं अपने साथ केवल वह प्रेम, आदर और मानवता ही ले जा सकूंगा जो मैंने बाँटी हैस यह मैंने स्वीकार कर लिया है।

१९. मेरा शरीर मेरे माता–पिता का दिया हुआ हैस आत्मा परम कृपालु प्रकृति का दान है और नाम फॉइबा का दिया हुआ है... जब मेरा अपना कुछ भी नहीं है, तो लाभ–हानि की क्या गणना?

२०. अपनी सभी प्रकार की कठिनाइयाँ या दुख लोगों को कहना छोड़ दिया है, क्योंकि मुझे समझ आ गया है कि जो समझता है उसे कहना नहीं पड़ता और जिसे कहना पड़ता है वह समझता ही नहीं।

२१. अब अपने आनंद में ही मस्त रहता हूँ क्योंकि मेरे किसी भी सुख या दुख के लिए केवल मैं ही जिम्मेदार हूँस यह मुझे समझ आ गया है।

२२. हर पल को जीना सीख गया हूँ क्योंकि अब समझ आ गया है कि जीवन बहुत ही अमूल्य हैस यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं हैस कुछ भी कभी भी हो सकता है, ये दिन भी बीत जाएँगे।

२३. आंतरिक आनंद के लिए मानव सेवा, जीव दया और प्रकृति की सेवा में डूब गया हूँस मुझे समझ आया है कि अनंत का मार्ग इन्हीं से मिलता है।

२४. प्रकृति और देवी–देवताओं की गोद में रहने लगा हूँस मुझे समझ आया है कि अंत में उन्हीं की गोद में समा जाना है। देर से ही सही, लेकिन समझ आ गया हैस शायद मुझे जीना आ गया है।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।